१०. क्षेत्र अध्ययन

भूगोल विषय हेतु क्षेत्र-अध्ययन एक महत्वपूर्ण अध्ययन पद्धति है । क्षेत्र के दौरे पर रहते हुए भौगोलिक घटकों और प्रक्रियाओं का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त होता है । भौगोलिक संकल्पनाओं को समझना आसान होता है । मानव और पर्यावरण के परस्पर सहसंबंधों को जानने की दृष्टि से भौगोलिक क्षेत्र के दौरे उपयुक्त होते हैं । क्षेत्र के दौरे का विषय, स्थान एवं समयावधि के अनुसार क्षेत्र दौरे का नियोजन करना आवश्यक होता है ।

किसी कार्यालय में स्वयं जाकर संबंधित कार्यालय के कार्य को जानना भी क्षेत्र के अध्ययन का प्रमुख हेतु हो सकता है । क्षेत्र-अध्ययन के दौरान विविध प्रकार की जानकारी प्राप्त की जा सकती है । उसके किए प्रश्नावली तैयार की जाती है । प्राप्त जानकारी संकलित कर प्रतिवेदन तैयार किया जाता है ।

क्षेत्र-सर्वेक्षण के पूर्व की तैयारी :

प्रश्नावली का नमूना, लिखने के लिए कापी, कैमरा, कलम, सीस इत्यादि वस्तु साथ में रखना चाहिए । जानकारी प्राप्त करने के लिए संबंधित कार्यालय की पूर्व-अनुमति लेना आवश्यक है । इसके बाद ही क्षेत्र-सर्वेक्षण हेतु दिन एवं समय निर्धारित करना चाहिए । क्षेत्र-सर्वेक्षण के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे हाथों किसी भी प्रकार का कोई नुकसान न हो । इस पाठ में चुनाव कार्यालय का दौरा कर जानकारी एकत्रित करने हेतु प्रश्नावली का एक नमूना आगे दिया गया है । इस प्रश्नावली को पढ़ो। किसी भी कार्यालय से जानकारी प्राप्त करने हेतु इसी प्रकार की प्रश्नावली का उपयोग किया जाता है । आगे दिए गए प्रश्नों के आधार पर नीचे दिए गए क्षेत्र-सर्वेक्षणों के लिए तुम प्रश्नावली स्वतः तैयार करो । उदा. पटवारी कार्यालय, कोई लघु उद्योग इत्यादि का दौरा ।

प्रश्नावली :

तहसील एवं जिला चुनाव कार्यालय का दौरा :

(१) कार्यालय का नाम
(२) इस कार्यालय से संबंधित प्रमुख का पद क्या है?
(३) इस कार्यालय के द्वारा कौन-कौन-से कार्य किए जाते हैं?
(४) चुनाव विभाग का कार्य किसके निर्देशों के आधार पर चलता है?
(५) कार्यालय द्वारा कौन-कौन-से चुनाव कराए जाते हैं?
(६) चुनाव हेतु आवश्यक अधिक कर्मचारियों की आपूर्ति कहाँ से होती है ?
(७) चुनाव की सूचना कितने दिन पहले दी जाती है ?
(८) चुनाव हेतु नए मतदाताओं का पंजीयन करना एवं मतदाता सूचियों को अद्यतन करने का कार्य किसके माध्यम से होता है ?
(९) चुनाव-संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रत्यक्ष रूप से कौन करता है?
(१०) चुनाव के दौरान कौन-कौन-से परमिट/अनुमति पत्र आपके कार्यालय द्वारा दिए जाते हैं ?
(११) प्रत्यक्ष मतदान के समय मतदान केंद्र पर कितने व्यक्तियों की नियुक्ति की जाती है ?
(१२) चुनाव का कार्य करने वाले कर्मचारियों का मतदान कब होता है ? कैसे ?
(१३) मतदान का समय क्या होता है ?
(१४) क्या विशेष परिस्थितियों में मतदान करने हेतु समयावधि को बढ़ाया जाता है?
(१५) मतदान की प्रक्रिया पारदर्शी होने के लिए क्या प्रयास किए जाते हैं ?
(१६) मतदान यंत्र के फायदे/ नुकसान बताइए ।
(१७) मतदान यंत्र कहाँ से उपलब्ध होते हैं ?
(१८) मतदान यंत्र का उपयोग कबसे किया जाने लगा?
(१९) मतदान यंत्र में खराबी आने पर किस प्रकार की त्वरित कार्यवाही करनी पड़ती है?
(२०) इससे पहले मतदान कैसे किया जाता था ?
(२१) आचार संहिता चुनाव के कितने दिन पहले और बाद तक लागू रहती है ?
(२२) चुनाव कार्यालय के कामों के लिए आप अन्य किन-किन विभागों की सहायता लेते हैं ?
(२३) उपचुनाव किन परिस्थितियों में कराए जाते हैं?
(२४) यदि प्रत्याशियों को समान मत मिलते हैं तो आप क्या कराते हैं ?
(२५) परिणाम का अंतिम निर्णय जनता के सामने कौन घोषित करता है ?
(२६) क्या पहले चुनावों की जानकारी भी कार्यालय द्वारा संकलित की जाती है ?
(२७) क्या प्रत्याशियों को जीतने के बाद प्रमाण पत्र दिए जाते हैं? उनपर किसके हस्ताक्षर होते हैं ?

प्रतिवेदन लेखन :

कार्यालय का दौरा समाप्त कर लौटने के पश्चात कार्य की जानकारी प्राप्त कर प्रतिवेदन (रिपोर्ट) लिखा जाता है । इसमें मानचित्र, तालिकाओं, आलेखों, चित्रों और छायाचित्रों का भी समावेश होता है ।

निम्न बिंदुओं के अनुसार प्रतिवेदन लिखिए ।

(१) प्रस्तावना
(२) कार्यालय में कार्यरत कर्मचारी
(३) कार्यालय के कार्य
(४) आनेवाली समस्याएँ एवं उनसे निपटने के उपाय
(५) धन्यवाद
(६) संदर्भ सूची

- प्रतिवेदन का समूह में / वैयक्तिक प्रस्तुतीकरण करो ।

एक विद्‌यालय के छात्रों ने अपने शिक्षकों के साथ तहसील कार्यालय का दौरा किया । संपूर्ण चुनाव प्रक्रिया जानने के लिए प्रश्नावली तैयार की । चुनाव अधिकारियों से मिलकर जानकारी एकत्रित की । एकत्रित जानकारी का प्रतिवेदन तैयार किया और उसका उपयोग विद्‌यालय में होनेवाले चुनावों के लिए किया ।

चुनाव तंत्र से संबंधित कुछ छायाचित्र

उपक्रम :

अपनी कक्षा द्‌वारा किसी विशिष्ट स्थान/कार्यालय का दौरा करने के लिए योजना बनाएँ एवं प्रश्नावली तैयार करो ।

आकृति १०.१ : चुनाव कार्यालय का दौरा

GVMQSC

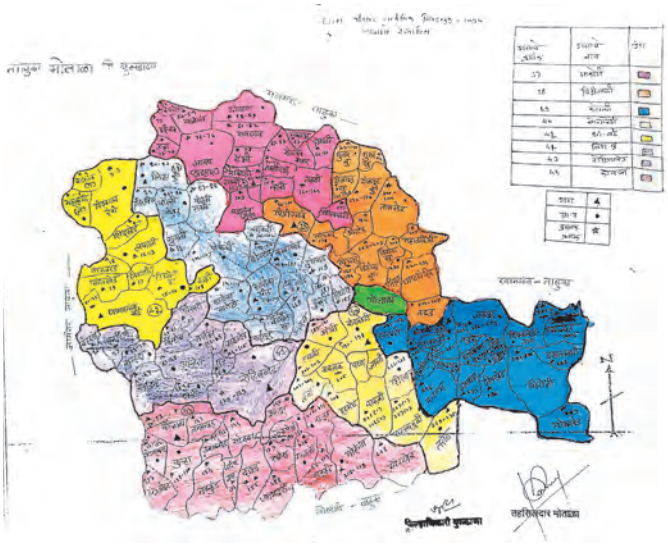

आकृति १०.२ : चुनाव क्षेत्र का मानचित्र

आकृति १०.३ : मतदाता सूची का नमूना

आकृति १०.४ : इलेक्ट्रॉनिक मतदान मशीन

भौगोलिक शब्दों की सविस्तृत व्याख्या

- **असांतत्य** *(Discontinuity)* : किसी आरेख में दिखाए गए वक्रों की प्रवृत्ति में परिवर्तन होने पर असांतत्य दिखाई देता है । अध्ययनकर्ता असांतत्य के कारणों का पता लगाते है । भूकंप वैज्ञानिकों को गहराई के अनुसार भूकंप तरंगों की गति में होने वाले परिवर्तनों में अनेक असांतत्य दिखाई देते हैं । इससे उस गहराई पर मिलने वाले पदार्थों के घनत्व का अध्ययन कर वहाँ की परिस्थितियों और आंतरिक भाग के विभिन्न स्तरों के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है ।

- **आचार संहिता** *(Code of Conduct)* : चुनाव आयोग द्वारा चुनाव की अवधि में राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं और प्रत्याशियों के आचरण से संबंधित निर्देश । चुनाव की घोषणा और चुनाव के परिणाम की घोषणा होने तक आचार संहिता लागू रहती है ।

- **आंतरिक क्रोड** *(Inner Core)* : पृथ्वी के गर्भ का एक भाग । क्रोड का कुछ भाग बाहरी क्रोड से अलग हो सकता है इस बात की खोज १९३५ में डेनमार्क के भूकंप वैज्ञानिक इंगे लहमान ने की । उन्होने कहा कि बाहरी क्रोड भले ही द्रव अवस्था में हो पर आंतरिक क्रोड ठोस अवस्था में है। तत्पश्चात, 1940 के आस-पास जापानी वैज्ञानिकों ने इस बात की पुष्टि की । अत्याधुनिक एवं अधिक अचूक भूकंपमापक यंत्र के द्वारा मिली जानकारी के आधार पर १९७० के आस-पास इस वास्तविकता को सबने मान्यता दी ।

- **उपनगर** *(suburban)* : बड़े शहरों में जब जनसंख्या एवं व्यवहारों में जटिलता बढ़ जाती है और शहरों में जगह कम पड़ने लगती है तो भूमि का मूल्य आम आदमी वहन नहीं कर पाता, शहर के तनावपूर्ण जीवन से दूर भागने का मन करने लगता है इत्यादि कारणों से शहर के निवासी शहर से दूर बसने लगते हैं। समय के साथ ये अधिवास बढ़ने लगते हैं और शहरों के पास उपनगरों का विकास होता है ।

- **ओस** *(Dew)* : सुबह अथवा शाम के समय कम मोटी सतह पर हवा में मौजूद वाष्प का संघनन होकर जल के कण जमा हो जाते हैं । घास अथवा पेड़ की पत्तियों पर ऐसे छोटे कण तैयार होते हैं । पत्तों का तापमान आस-पास के वातावरण से कम होता है । आस-पास की हवा में स्थित वाष्प का संपर्क ठंडी पत्तियों से होता है और संघनन की प्रक्रिया होती है। इससे पानी के कण पत्तियों पर जमा हो जाते हैं ।

- **ओसबिंदु तापमान** *(Level of Dew point temperature)* : वह तापमान जिस पर किसी विशिष्ट वायुराशि में स्थित वाष्प का रूपान्तरण जल के कणों में होने लगता है । तापमान का यह स्तर हर वायुराशि में बदलता है । इस स्तर की ऊँचाई वायुराशि में स्थित वाष्प के प्रमाण पर निर्भर है । अलग-अलग वायुराशियों में वाष्प का प्रमाण एक-जैसा नहीं होता । जिस ऊँचाई पर वायुराशि का तापमान कम होकर वह वाष्प-संतृप्त बनती है , वह स्तर संघनन स्तर भी कहलाता है ।

- **औद्योगीकरण** *(Industrialisation)* : किसी प्रदेश में उद्योगों के शुरू होने और इनके विकसित होने की प्रक्रिया ।

- **कार्यशील जनसंख्या** *(Working Population)* : जनसंख्या का सक्रिय समूह । देश की कुल जनसंख्या में से १५ वर्ष से ५९ वर्ष तक की आयु के लोग नौकरी, व्यवसायों में कार्यरत रहते हैं और अपनी उपजीविका चलाते हैं । इसीलिए इस आयु-समूह को कार्यशील समूह कहते हैं। १५ वर्ष से कम एवं ५९ वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्तियों को आश्रित जनसंख्या माना जाता है ।

- **केंद्रीय व्यावसायिक क्षेत्र** *(Central Business District – CBD)* :नगरीय भूमि –उपयोग का एक प्रकार । बड़े शहरों में बहुधा व्यापार / आर्थिक लेनदेन किसी विशिष्ट भाग में केंद्रित होते हैं। यह भाग सामान्यतया शहर के बीच में होता है । ऐसे भाग को केंद्रीय व्यावसायिक क्षेत्र कहते हैं । ऐसे भागों में निवासी इमारतें अथवा कारखानें नहीं होते । इन भागों में जनसंख्या का घनत्व भी कम ही होता है ।कई शासकीय आस्थापनाओं के कार्यालय यहाँ होते हैं।

- **कोहरा** *(Fog)* : वायु में तैरने वाले जल के सूक्ष्म कण अथवा अति सूक्ष्म हिम का स्फटिक कण । मेघ और कोहरे में अंतर है । कोहरा कम ऊँचाई पर होता है और कोहरे का छाना स्थानीय परिस्थितियों पर निर्भर करता है । कोहरे के कारण क्षेत्र में दृश्यता कम हो जाती है ।

- **गैर-कृषि भूमि** *(Non agricultural land)* : कृषि के अतिरिक्त अन्य प्रयोजनों के लिए उपयोग में लाई जाने वाली भूमि । इसका उपयोग सड़क, निवासी इमारतें इत्यादि के लिए किया जाता है ।

- **ग्वायर्स** *(gyre)* :सागरों में कुछ स्थानों में सागरीय धाराओं के प्रवाह में चक्रीय प्रतिरूप तैयार होता है । विषुवतरेखीय धाराएँ पूर्वी पवनों के प्रभाव के कारण पूर्व से पश्चिम की ओर बहती हैं । महाद्वीप के तट के पास ये धाराएँ उत्तर या दक्षिण की

ओर (गोलार्ध के अनुसार) मुड़ती हैं । आगे जाकर, पश्चिमी पवनों (पछुआ) के प्रभाव के कारण उनकी दिशा बादल जाती है एवं वे पश्चिम की ओर बहने लगती हैं। ये धाराएँ महाद्वीप के तट के पास विभाजित हो जाती हैं और तट के अनुसार बहने लगती हैं। इन विभाजित धाराओं में से एक धारा फिर से विषुवतरेखा की ओर आने से चक्रीय प्रतिरूप तैयार होता है । ऐसे चक्रीय प्रतिरूप के मध्य भाग में सागरीय जल कुछ स्थिर/ शांत होता है । ऐसे प्रतिरूप सभी महासागरों में बनते हैं । उत्तर अटलांटिक महासागर में सरगासो समुद्र के आसपास ऐसे ही एक प्रवाह चक्र की उत्पत्ति हुई है ।

- **जनगणना** *(Census)* : गिनने की प्रक्रिया । जब किसी देश में रहने वाले व्यक्तियों की गणना की जाती है इस प्रक्रिया को जनगणना कहते हैं । ऐसी गणना विशिष्ट कालावधि के पश्चात ही की जाती है । प्रादेशिक नियोजन में जनगणना का बहुत उपयोग होता है । भारत में जनगणना १० साल के अंतराल से दशक के प्रारंभ में की जाती है । इसके पहले की जनगणना वर्ष २०११ में हुई थी। इसी तरह वृक्ष एवं पक्षियों की भी गणना की जाती है।
- **जलमग्न पर्वत** *(Submerged Mountain)* : सागर तल पर अनेक जलमग्न पवर्त श्रेणियाँ हैं । उन सब में मध्य अटलांटिक पवर्तश्रेणी सबसे लंबी एवं सिलसिलेवार है । इसकी लंबाई करीब ६५००० किमी है । अन्य महासागरों में भी ऐसी अनेक पवर्त श्रेणियाँ हैं । ये सभी पर्वत श्रेणियाँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं और इन्हें सामूहिक रूप से पृथ्वी की सबसे लंबी पर्वत श्रेणी समझा जाता है । इनकी कुल लंबाई करीब ८०००० किमी है ।
- **तुषार** *(Frost)* : यह धरातल के पास संघनन का एक प्रकार है । तापमान कम हो जाने से वायु की वाष्प का रूपांतरण हिम के कणों में होने लगता है । ऐसे हिम कणों की परत घास अथवा पत्तियों पर दिखाई देती है । सामान्यतया, समशीतोष्ण प्रदेशों में सर्दियों के मौसम में दिखाई देता है ।
- **दिनमान एवं रात्रिमान** *(Duration of Day)* : दिन की एक विशिष्ट कालावधि । सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक सूर्य आसमान में होने के कारण हमें प्रकाश का अनुभव होता है । इसीलिए इस अवधि को दिनमान कहते हैं । इसके विपरीत सूर्यास्त से लेकर अगले सूर्योदय तक आसमान में सूर्य नहीं दिखता है तब हमें अंधेरा दिखाई देता है । इस अंधेरे की कालावधि को रात्रिमान कहते हैं । यह अवधि ऋतु के हिसाब से एवं प्रदेश की अक्षांशीय स्थिति के अनुसार बदलती है ।
- **धुंध** *(Smog)* : औद्योगिक शहरों में वायु प्रदूषित होने से कोहरा एवं धुआँ मिलाकर धुंध तैयार हो जाता है। बड़े शहरों में वाहनों से निकलने वाले धुएँ से भी धुंध तैयार हो जाता है। धुंध को अंग्रेजी में fog कहते हैं और धुएँ को smoke कहते हैं । इन दो शब्दों को मिलाकर smog शब्द बना है ।
- **निरपेक्ष आर्द्रता** *(Absolute Humidity)* : किसी विशिष्ट स्थान पर विशिष्ट समय पर वायु में स्थित वाष्प की मात्रा । इसे ग्राम/ मी^{३} इकाई में व्यक्त किया जाता है ।
- **निरूपक भिन्न** *(Representative Fraction)* : मानचित्र की मापनी का एक प्रकार । इसे ही अंक मापनी भी कहते हैं । इसमें मानचित्र और भूमि की दूरियों को भिन्न (अपूर्णाङ्क) के द्वारा व्यक्त किया जाता है । यह भिन्न दोनों ही दूरियों का प्रतिनिधित्व करता है , इसीलिए इसे निरूपक भिन्न कहते हैं। इसमें अंश का स्थान मानचित्र की दूरी को दिखाता है तो हर भूमी की दूरी को दिखाता है ।
- **परती भूमि** *(Fallow land)* : यह भूमि कृषि योग्य तो होती है पर किसान फसल नहीं लेता। ऐसी भूमि को परती भूमि कहते हैं । निरंतर फसल लेने से भूमि की उर्वरता में कमी आ जाती है । इसीलिए किसान कुछ समय के लिए फसल नहीं उगाता। ऐसी भूमि को चालू वर्ष की परती भूमि कहते हैं।
- **परिमाण** *(Units of Measurement)* : वस्तु अथवा पदार्थ के गुणधर्मों को नापने के लिए एवं काल के मापन हेतु उपयोग में लाई जाने वाली इकाइयाँ। सेंटीमीटर लंबाई की इकाई है , ग्राम वजन की इकाई। वर्ष, दिन , घंटे अथवा मिनट कालमापन की इकाइयाँ हैं ।
- **परिभ्रमण** *(Rotation)* : अपनी ओर घूमने की गति । पृथ्वी एवं आकाश में सभी गोलाकार खगोलीय पिंड अपनी ओर एक गति से घूमते हैं । किंबहुना, स्वतः के चारों ओर घूमने से ही उन्हें गोलाकार प्राप्त होता है ।
- **पृथ्वी की आंतरिक संरचना** *(Interior of the earth)* : पृथ्वी की सतह से पृथ्वी के गर्भ तक के भाग को पृथ्वी की आंतरिक संरचना कहते हैं । पृथ्वी की आंतरिक संरचना में एक के अंदर एक ऐसे तीन मुख्य स्तर हैं ।
- **बाहरी क्रोड** *(Outer Core)* : मैंटल के नीचे के भाग को पृथ्वी का गर्भ (क्रोड) कहते है । इसके दो विभाग - आंतरिक एवं बाह्य किए जाते हैं । भूकंप की गौण तरंगें बाहरी क्रोड एवं

मैंटल की सीमा के पास लुप्त हो जाती हैं । ये तरंगें क्रोड में से गुजर नहीं पातीं । इससे यह अनुमान वैज्ञानिक लगाते है कि बाहरी क्रोड द्रव अवस्था में होगा ।

- **भारी उद्योग** *(Heavy Industries)* : जिन उद्योगों का तैयार माल आकार में बड़ा एवं वजन से अधिक होता है अथवा उद्योगों में प्रयुक्त यंत्र-समूह आकार में बड़े एवं जिनका वजन अधिक होता है अथवा जिसकी उत्पादन प्रक्रिया बहु-आयामी एवं अधिक जटिल होती है अथवा जो उद्योग बहुत बड़े क्षेत्र में फैले रहते हैं, उन्हें भारी उद्योग कहा जाता है। उदा. लौह-इस्पात उद्योग, वाहन-उद्योग, रेल उद्योग, यंत्र- उपकरण उद्योग, इत्यादि ।
- **भू-चुंबकीय क्षेत्र** *(Geo Magnet Field)* : पृथ्वी के गर्भ का यह भाग मुख्यतः द्रव अवस्था (बाहरी क्रोड) एवं ठोस (आंतरिक क्रोड) लौह का बना है । बाहरी एवं आंतरिक क्रोड मैंटल से अत्यधिक तप्त अवस्था में है । तापमान के इस अंतर के कारण बाहरी क्रोड में औष्णिक ऊर्ध्व प्रवाहों की उत्पत्ति होती है । उसकी तुलना में ठंडा द्रव पृथ्वी के केंद्र की ओर बहने लगता है । इस प्रकार से तयार प्रवाह सर्पिल स्तंभ के स्वरूप में एवं पृथ्वी के अक्ष को समानांतर होता है । ऐसे अनेक प्रवाह बाहरी क्रोड में तैयार होते हैं । इससे पृथ्वी को चुंबकीय गुणधर्म प्राप्त होता है । इसी से चुंबकीय क्षेत्र एवं पृथ्वी के आस-पास चुंबकीय आवरण की उत्पत्ति हुई है ।
- **भू-जनित्र** *(Geo-dynamo)* : पृथ्वी के गर्भ का भाग । यह भाग मुख्यतः द्रव अवस्था (बाहरी क्रोड) एवं ठोस (आंतरिक क्रोड) लौह का बना है । बाहरी एवं आंतरिक क्रोड मैंटल से अत्यधिक तप्त अवस्था में है । तापमान के इस अंतर के कारण बाहरी क्रोड में औष्णिक ऊर्ध्व प्रवाहों की उत्पत्ति होती है । उसकी तुलना में ठंडा द्रव पृथ्वी के केंद्र की ओर बहने लगता है । इस प्रकार से तयार प्रवाह सर्पिल स्तंभ के स्वरूप में एवं पृथ्वी के अक्ष को समानांतर होता है । ऐसे अनेक प्रवाह बाहरी क्रोड में तैयार होते हैं । ये सर्पिल प्रवाह और पृथ्वी के परिभ्रमण के कारण तैयार होने वाला अक्ष सामूहिक रूप से भू-जनित्र कहलाता है ।
- **मानक समय** *(Standard Time)* : किसी देश में मध्य देशांतर रेखा के अनुसार माना गया समय । यह समय देश के मध्य देशांतर के मध्याह्न के समय के अनुसार तय की जाती है और उस देश में सभी स्थानों पर इसी समय का उपयोग किया जाता है ।
- **मानचित्र की मापनी/पैमाना** *(Map scale)* : संपूर्ण पृथ्वी अथवा उसके विशिष्ट भाग खष प्रमाणबद्ध चित्र मानचित्र कहलाते हैं । यह प्रमाण दो स्थानों के बीच के प्रत्यक्ष अंतर और मानचित्र के अंतर के अनुपात को दर्शाता है । मापनी का वर्गीकरण कथनात्मक मापनी, अंक मापनी एवं रेखीय मापनी में किया जाता है ।
- **मेघ** *(Cloud)* : वायु में तैरती अवस्था में पाए जाने वाले सूक्ष्म जल अथवा हिम के कणों का समूह । मेघ अधिक ऊँचाई पर पाए जाते हैं । वायु का तापमान ओसबिंदु तक पहुँचते हीवह ठंडी हो जाती है तो वह वाष्प संतृप्त हो जाती है । यदि तापमान और भी अधिक कम होने लगता है तो वाष्प का जल के कणों में परिवर्तन होने लगता है । ऐसे जलकण हल्के होते हैं और इसीलिए वातावरण में तैरने लगते हैं और उनसे मेघों की उत्पत्ति होती है ।
- **मैंटल** *(Mantle)* : भूपटल के नीचे के स्तर को मैंटल कहते हैं । इसकी मोटाई करीब २८७० किमी है । पृथ्वी के कुल आयतन का करीब ८४ % मैंटल में ही पाया जाता है ।
- **योजनाबद्ध शहर** *(Planned city)* : किन्हीं राजनीतिक कारणों से अथवा मौजूदा शहरों की बड़े पैमाने पर होने वाली वृद्धि के कारण किसी शहर को नए सिरे से बसाया जाता है । ऐसे शहरों को योजनाबद्ध शहर कहते हैं । उदा. स्वतंत्रता के पहले लाहौर संयुक्त पंजाब राज्य की राजधानी थी । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के पंजाब राज्य के लिए चंडीगढ़ शहर का निर्माण किया गया । मुंबई की महाकाय वृद्धि को देखते हुए 'नवी मुंबई' को बसाया गया । संप्रति, आंध्र प्रदेश राज्य के लिए 'अमरावती' नामक योजनाबद्ध शहर का निर्माण किया जा रहा है ।
- **राजस्व विभाग** *(Revenue Department)* : नागरिकों एवं उद्योगों से मिलने वाला कर इकट्ठा करना एवं उसका पंजीयन करना, स्वामित्व संबंधी पंजीयन करना, सातबारा इत्यादि का अभिलेख रखनेवाला सरकार का विभाग अर्थात राजस्व विभाग । हर राज्य का अपना एक स्वतंत्र राजस्व विभाग होता है ।
- **लघु मापनी मानचित्र** *(Small Scale Map)* : मानचित्र की मापनी के अनुसार मानचित्रों का एक वर्गीकरण । इन मानचित्रों में बड़े क्षेत्रों की सामान्य जानकारी दी जाती है । सामन्यतया १:१०,००० अथवा इससे कम भिन्न जिन मानचित्रों पर होता है उन्हें लघु मापनी मानचित्र कहते हैं । राज्यों के मानचित्र, देशों के मानचित्र, मानचित्र पुस्तिका के अधिकांश मानचित्र इत्यादि लघु मापनी मानचित्र के उदाहरण हैं ।

- **लिंग अनुपात** *(Sex ratio)* : जनसंख्या में पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या । इसे प्रति हजार में व्यक्त किया जाता है । उदा., हरियाणा का लिंग अनुपात प्रति हजार ८७९ है तो वहीं केरल का लिंग अनुपात प्रति हजार १०८४ है ।
- **वाष्प धारण क्षमता** *(Moisture holding capacity)* : वायु की वाष्प का समावेश करने की क्षमता। यह क्षमता वायु की ऊष्मा के अनुसार बदलती है । कम तापमान की वायु अधिक वाष्प का धरण नहीं कर सकती । जैसे जैसे तापमान बढ़ता है वैसे-वैसे वाष्प धारण क्षमता बढ़ती जाती है ।
- **वाष्प संतृप्त हवा** *(Saturated Air)* : किसी विशिष्ट तापमान में जितनी अधिक से अधिक वाष्प का समावेश हो सकता है उतनी वाष्प यदि वायु में होगी तो उसे वाष्प संतृप्त हवा कहेंगे ।
- **वाष्पीकरण** *(Evaporation)* : द्रव का वायुरूप अवस्था में रूपांतरण होने की प्रक्रिया को वाष्पीकरण कहते है । पानी की वाष्प बनने की क्रिया इसका सहज और सरल उदाहरण है । पानी की सतह के पास की हवा में वाष्प का प्रमाण यदि अधिक होगा तो वाष्पीकरण की गति कम होगी । यदि हवा वाष्प संतृप्त होगी तो वाष्पीकरण नहीं होगा । जल की सतह पर यदि धीमी पवन बह रही होगी अर्थात नई-नई हवा आ रही होगी तो वाष्पीकरण की गति अधिक होगी ।
- **वेधन छिद्र** *(Bore hole)* : भूमि में यंत्र के माध्यम से किए गए खड्डे । अधिक गहराई से भूजल प्राप्त करने हेतु ऐसे छिद्रों का उपयोग किया जाता है । भूगर्भ के अध्ययन के लिए भूपटल पर ऐसे अनेक छिद्र (खड्डे) खोदे गए है । उदा., कोयना-वारणा क्षेत्र में भूकंप का अध्ययन करने हेतु ७ किमी गहराई तक विंधन छिद्र खोदने का प्रयास चल रहा है ।
- **वृहत् मापनी मानचित्र** *(Large Scale Map)* : मानचित्र की मापनी के अनुसार मानचित्रों का एक वर्गीकरण । इन मानचित्रों में छोटे क्षेत्रों की विस्तृत जानकारी दी जाती है । सामन्यतया १:१०,००० अथवा इससे अधिक भिन्न जिन मानचित्रों पर होता है उन्हें बृहद् मापनी मानचित्र कहते हैं । गाँवों के मानचित्र, खेतों के मानचित्र इत्यादि बृहद् मापनी के मानचित्र होते हैं ।
- **सकल घरेलू उत्पाद** *(Gross National Product GNP)* : सकल घरेलू देश की आर्थिक गतिविधियों का द्योतक होता है । एक वर्ष में देश के नागरिकों द्वारा उत्पादित माल एवं दी गई सेवाओं का यह कुल मूल्य होता हैं । इसमें नागरिकों एवं देश के अंदर स्थित कंपनियों द्वारा विदेश में प्राप्त उत्पाद का भी समावेश होता है किंतु विदेशी नागरिकों द्वारा देश में प्राप्त उत्पन्न का समावेश इसमें नहीं किया जाता ।
- **संक्रमण** *(transition)* : संक्रमण यह अवधारणा क्षेत्र, काल एवं परिस्थिति से संबंधित है । जब अचानक परिवर्तन होते हैं तब उस क्षेत्र में काल में समय में अथवा परिस्थिति में सीमाएँ स्पष्ट होती हैं । किंतु यदि परिवर्तन धीमी गति से हों तो सीमाएँ धुँधली होती हैं एवं अधिक क्षेत्र एवं समय व्याप्त करती हैं ।
- **संघनन** *(Condensation)* : वायुरूप पदार्थ का द्रव अवस्था में रूपांतरण होने की प्रक्रिया । वायु में स्थित वाष्प का जलकणों में इसी प्रक्रिया के द्वारा रूपांतरण होता है । यदि संघनन की प्रक्रिया धरातल के पास होती है तो ओस, कोहरा इत्यादि बनते हैं । यदि संघनन अधिक ऊँचाई पर होता है तो मेघ बनते हैं ।
- **संपत्ति कार्ड** *(property card)* : नगरीय अधिवासों में संपत्ति का पंजीयन दिखाने वाला अभिलेख या दस्तावेज । स्थानीय स्वशासी संस्थाओं के पास (नगरपरिषद, नगरपालिका इत्यादि) यह उपलब्ध होता है ।
- **सागरीय नितल** *(Ocean floor)* : सागरीय नितल पर भी भूमि की तरह ऊँचे-नीचे भाग हैं । सागरीय नितल पर भी जलमग्न पर्वत हैं । उसी तरह बहुत गहरी गर्तें भी हैं । प्रशांत महासागर की मरियाना गर्त करीब ११००० मीटर गहरी है । यह इतनी गहरी है कि उसमें विश्व का सबसे ऊँचा माऊंट एवरेस्ट पर्वत पूर्णतः डूब जाएगा । किसी भी महासागर के नितल की आयु २०० मिलियन वर्षों से अधिक नहीं है । मध्य महासागरीय पर्वत श्रेणियों एवं महाद्वीपों के तटों के पास की गर्तों को भूगर्भ विज्ञान की दृष्टि से सागरीय नितल पर सर्वाधिक सक्रिय भाग माना जाता है ।
- **सागरीय निक्षेप** *(Oceanic Sediments)* : महासागर में जमा होने वाले अवसादों के तीन प्रकार होते हैं । १. महाद्वीपों पर होने वाली अपक्षरण की प्रक्रिया से तैयार अथवा महासागर में होने वाले ज्वालामुखी के विस्फोट से बाहर निकलने वाले पदार्थ । २. सागरीय प्राणियों के अवशेष अथवा उनके कवच (शंख/सीपियाँ इ.) ३. सागरीय जल में होने वाले रासायनिक निक्षेपण से तैयार पदार्थ । महाद्वीप पर होने वाले अवसाद तटीय क्षेत्रों से दूर बहाकर ले जाए जाते है । गंगा नदी के अवसादों का निक्षेपण हिंद महासागर में करीब २००० किमी की दूरी तक दिखाई देते है ।

- **सागरीय पंक** *(Oceanic oozes)* : सागर के गहरे भाग में जमा हुए अवसादों को निक्षेप या पंक कहते है । ये अत्यंत सौम्य कीचड़ की तरह होते है । इसका कम-से-कम ३०% भाग महासागर में तैरने वाले सूक्ष्म जीवों के अवशेष होते है । सागरीय निक्षेप तट से दूर गहरे समुद्र में पाए जाते हैं ।
- **सापेक्ष आर्द्रता** *(Relative Humidity)* : किसी स्थान पर विशिष्ट समय पर वायु में स्थित वाष्प का प्रतिशत । वायु में स्थित वाष्प एवं उस तापमान पर वायु में जितना अधिक-से-अधिक वाष्प समा सकता है, उसके अनुपात को सापेक्ष आर्द्रता कहते है ।
- **सामाजिक उत्तरदायित्व** *(Corporate Social Responsibility)* : यह एक ऐसी अवधारणा है जिसका समावेश कंपनी नियम २०१३ में किया गया है । इसके अनुसार जिन उद्योगों का निवल मूल्य ५०० करोड़ या उससे अधिक है या जिनका कारोबार १००० करोड़ से अधिक है अथवा जिनके लाभ का मूल्य ५ करोड़ से अधिक है ऐसे उद्योगों को उनके लाभ की २% राशि आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय विकास हेतु खर्च करना अपेक्षित है ।
- **साक्षरता** *(Literacy)* : किसी प्रदेश में कुल जनसंख्या में से साक्षर लोगों का अनुपात । यह अनुपात प्रतिशत में व्यक्त किया जाता है । साक्षरता का अनुपात किसी क्षेत्र के लोगों की सामाजिक प्रगति अथवा विकास का निर्देशक माना जाता है । साक्षरता के प्रतिशत की गणना ७ वर्ष से अधिक आयु के लोगों की संख्या के अनुसार की जाती है ।
- **सार्वजनिक क्षेत्र** *(Land used for public purposes)* : सामान्यतया, नगरीय भूमि उपयोग के अंतर्गत ऐसी सुविधा का प्रावधान करना पड़ता है । नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व अधिक होने के कारण नागरिकों के मनोरंजन हेतु कुछ उद्यानों, मैदानों, हरे क्षेत्रों हेतु भूमि आरक्षित की जाती है और उसी भूमि उपयोग के लिए उसका उपयोग किया जाता है ।
- **सौरपवनें** *(Solar winds)* : सूर्य के वातावरण के उच्च भाग से बाहर पड़ने वाले आवेशित कणों का प्रवाह । यह वायु मुख्यतः विद्युत परमाणु, अतिसूक्ष्म कण एवं अल्फा कणों से युक्त होती है । सौरवात में अंतरग्रहीय चुंबकीय क्षेत्र का समावेश होता है । इनके घनत्व, तापमान एवं गति में समय के साथ परिवर्तन होता है । इसके कणों में अत्यधिक ऊर्जा के कारण ये सूर्य के गुरुत्वाकर्षण से मुक्त हो जाते हैं । सूर्य से कुछ दूरी पर (यह दूरी सूर्य की त्रिज्या के गुणकों में बताई जाती है ।) सौरवात की गति ध्वनि तरंगों की गति से भी अधिक होती है । यह २५० से ७५० किमी प्रति सेकंद हो सकती है ।
- **स्थानीय समय** *(Local Time)* : किसी स्थान का उसके मध्याह्न के समय के अनुसार का समय । यह समय हर देशांतर रेखा पर अलग-अलग होगा ।
- **स्थानीयकरण** *(Localisation)* : उद्योगों की स्थापना करते समय उनकी अवस्थिति पर अनेक कारक प्रभाव करते हैं । पूँजी की आपूर्ति, कच्चा माल की प्रकृति एवं उसकी उपलब्धता, बाजार, सरकारी नीतियाँ, मजदूरों की आपूर्ति इत्यादि कारकों का उद्योगों के स्थानीयकरण पर प्रभाव पड़ता हैं ।
- **स्वामित्व अधिकार** *(Ownership right)* : किसी भी अचल एवं अस्थायी संपत्ति का प्रत्यक्ष कागज पर सैद्धांतिक एवं नियमानुसार स्वामित्व का अधिकार । इस संपत्ति का उपयोग किस प्रकार किया जाए इसका अधिकार अर्थात स्वामित्व अधिकार होता है ।
- **क्षैतिज समानांतर** *(Horizontal)* : जो क्षैतिज को समानांतर जलवायु के अध्ययन में विशेषतः तापमान एवं वायुदाब में धरातल पर विभिन्न स्थानों पर परिवर्तन होते रहते हैं । ऐसे परिवर्तन ऊँचाई के अनुसार भी होते हैं । इनके वितरण का अध्ययन करते समय पृथ्वी के सतह पर होने वाले वितरण को क्षैतिज समानांतर वितरण कहते हैं । ऊँचाई के अनुसार होने वाले वितरण को ऊर्ध्वगामी वितरण कहते हैं ।

संदर्भ साहित्य :

- Physical Geography- A. N. Strahler
- Living in the Environment- G. T. Miller
- A Dictionary of Geography- Monkhouse
- Physical Geography in Diagrams- R.B. Bunnett
- Encyclopaedia Britannica Vol.- ५ and २१
- Encyclopaedia Britannica Vol.- ६ Micropedia
- India a Comprehensive Geography- D. R. Khullar
- Atlas of the World- National Geographic
- प्राकृतिक भूगोल- प्रा. दाते व सौ. दाते.
- इंग्रजी-मराठी शब्दकोश- J. T. Molesworth and T. Kandy

***

करके देखो ।

अगले पृष्ठ पर विश्व का मानचित्र दिया गया है । उसे खंडित रेखा पर काट लो । काटे हुए मानचित्र को मोटे कागज पर (कार्डपेपर) चिपकाओ । अब इस मानचित्र का आयतन (बेलनाकार) तैयार करो । ऐसा करते समय इस बात का ध्यान रखो कि दाईं और बाईं ओर की १८०° की देशांतर रेखाएँ एक-दूसरे पर आती हैं । ध्यान रखो कि इस मानचित्र पर १५° की दूरी से देशांतर रेखाएँ दी गई हैं ।

उसी पृष्ठ पर घंटे की एक पट्टी भी दी गई है । इस पट्टी पर २४ चिह्न दिए गए हैं । उनमें ० एवं २४ मध्यरात्रि दर्शाते हैं और १२ का चिह्न मध्याह्न का समय दर्शाता है । इस पट्टी को भी काट लो और उसको भी बेलनाकार दो । यह बेलनाकार तैयार करते समय इस बात का ध्यान रखो कि ० और २४ अंक एक-दूसरे पर आएँ ।

उपरोक्त गतिविधि करने के लिए उसके विभिन्न चरण बाजू में दिए गए चित्रों से समझने का प्रयत्न करो ।

मानचित्र पर किसी भी देशांतर रेखा पर किसी भी समय का चिह्न लगाने पर अन्य देशांतर रेखाओं पर क्या समय हो रहा होगा, यह तुम्हें समझ में आएगा । सरकने वाली इस पट्टी का एवं बेलनाकार मानचित्र का उपयोग कर तुम स्थानीय समय का खेल खेल सकते हो ।

१

२

३

४
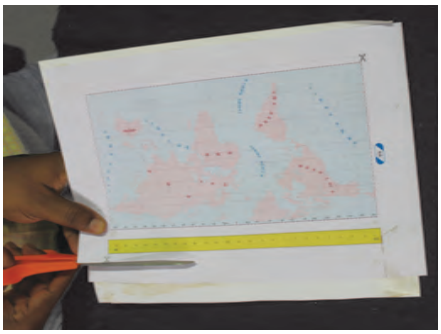

५

६
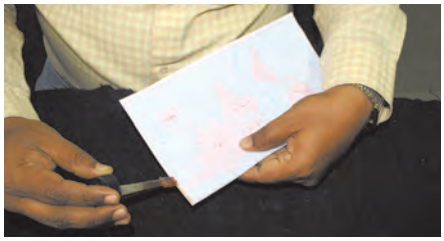

७
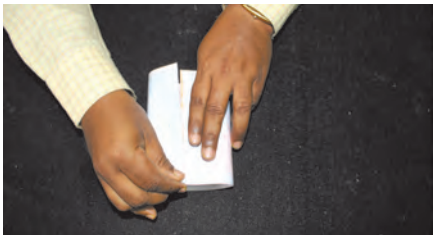

८

९

१०
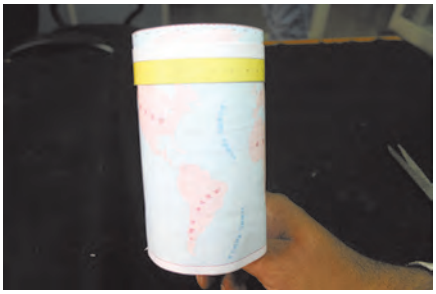

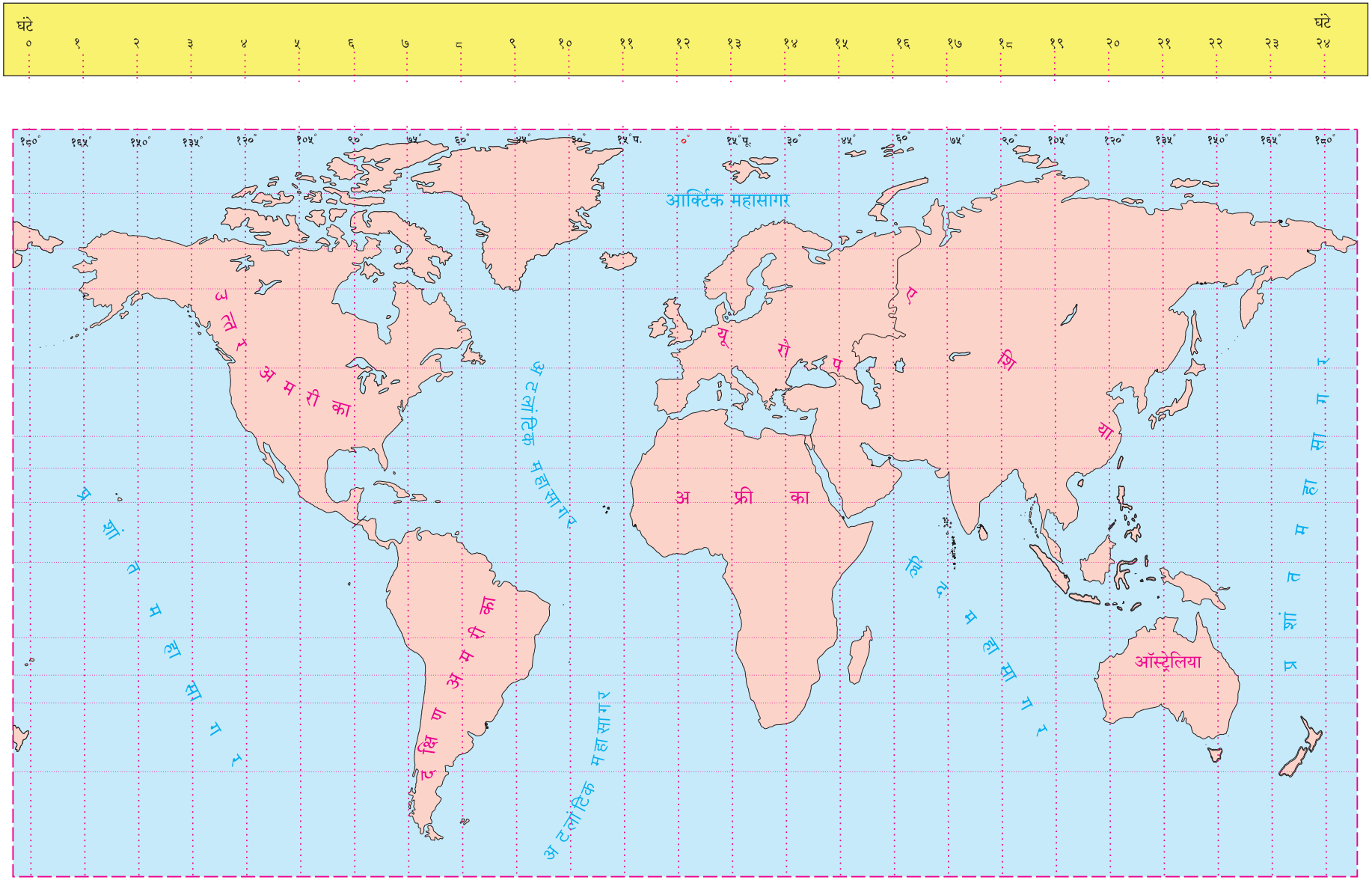
घंटे
० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४
घंटे
१८०° १६५° १५०° १३५° १२०° १०५° ९०° ७५° ६०° ४५° ३०° १५° प. ०° १५° पू. ३०° ४५° ६०° ७५° ९०° १०५° १२०° १३५° १५०° १६५° १८०°
आर्क्टिक महासागर
उत्तर अमरीका
यूरोप
एशिया
अफ्रीका
दक्षिण अमरीका
ऑस्ट्रेलिया
अटलांटिक महासागर
अटलांटिक महासागर
प्रशांत महासागर
प्रशांत महासागर
हिंद महासागर

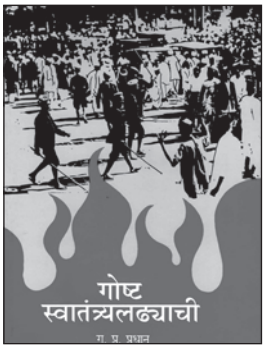

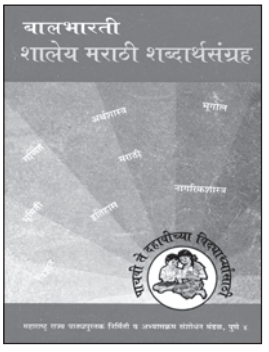

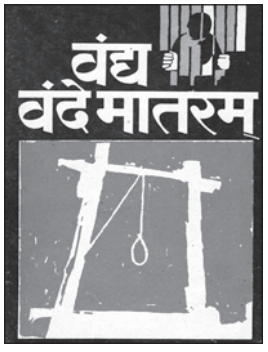

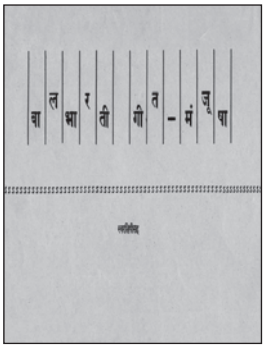

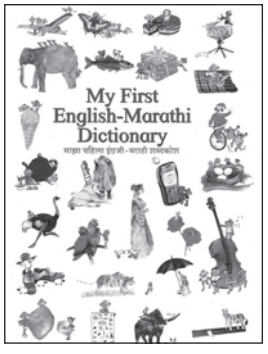

- पाठ्यपुस्तक मंडळाची वैशिष्ट्यपूर्ण पाठ्येत्तर प्रकाशने.
- नामवंत लेखक, कवी, विचारवंत यांच्या साहित्याचा समावेश.
- शालेय स्तरावर पूरक वाचनासाठी उपयुक्त.

पुस्तक मागणीसाठी www.ebalbharati.in, www.balbharati.in संकेत स्थळावर भेट द्या.

साहित्य पाठ्यपुस्तक मंडळाच्या विभागीय भांडारांमध्ये विक्रीसाठी उपलब्ध आहे.

ebalbharati

विभागीय भांडारे संपर्क क्रमांक : पुणे - ☎ २५६५९४६५, कोल्हापूर- ☎ २४६८५७६, मुंबई (गोरेगाव) - ☎ २८७७१८४२, पनवेल - ☎ २७४६२६४६५, नाशिक - ☎ २३९१५११, औरंगाबाद - ☎ २३३२१७१, नागपूर - ☎ २५४७७१६/२५२३०७८, लातूर - ☎ २२०९३०, अमरावती - ☎ २५३०९६५

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

भूगोल इयत्ता आठवी (हिंदी माध्यम)

₹ 38.00